तृतीयः पाठः

क्रियाकारक–कुतूहलम्

पाठःपरिचय– वाक्य रचना के समुचित ज्ञान से ही किसी भाषा पर अधिकार किया जाता है। वाक्य–रचना में कारक और क्रिया का संबंध सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता हैं। इसलिए भाषा के गहन गम्भीर ज्ञान के लिए कारक और क्रिया–पदों के पारस्परिक संबंध का ज्ञान होना आवश्यक है। संस्कृत में तो यह ज्ञान और भी अधिक आवश्यक है। क्योंकि उसमें विशेष परिस्थिति में किसी विशेष विभक्ति के प्रयोग के अनेक नियम है। भाषा–ज्ञान के लिए कारक और क्रिया के अतिरिक्त क्रिया के काल अर्थात् लकारों का ज्ञान होना भी अत्यावश्यक है।

प्रस्तुत पाठ में सरल श्लोकों के माध्यम से कारकों एवं क्रिया के लकारों का बोध कराया गया है। आरंभ के सात श्लोकों में क्रमशः सातों कारक और विभक्तियों का प्रयोग समझाया गया है और अंतिम पाँच श्लोकों के माध्यम से पाँचों लकारों का बोध कराया गया है।

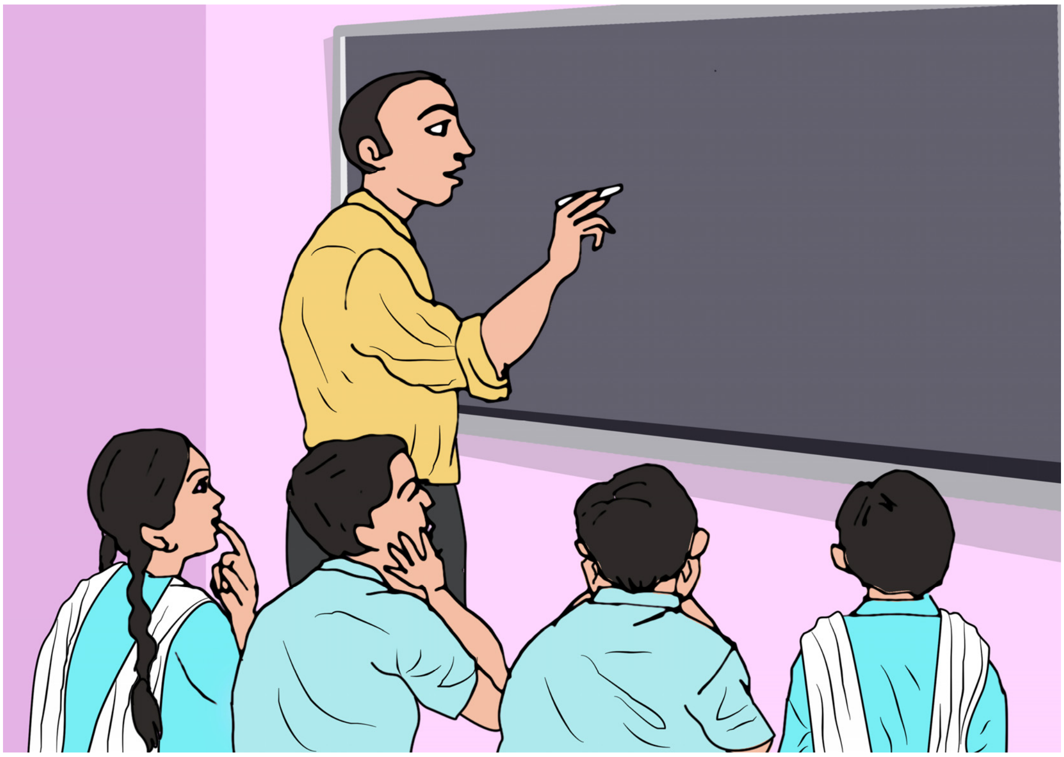

उद्यमः साहसं धैर्यं, बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत्।। 1।।

विनयो वंशमाख्याति, देशमाख्याति भाषितम्।
सम्भ्रमः स्नेहमाख्याति, वपुराख्याति भोजनम्।। 2।।

मृगाः मृगैः संगमनुव्रजन्ति, गावश्च गोभिस्तुरगास्तुरङ्गै।
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः समानशील–व्यसनेषु सख्यम्।। 3।।

विद्या विवादाय धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतद्, ज्ञानाय, दानाय च रक्षणाय।। 4।।

क्रोधात् भवति संमोहः, संमोहात् स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद्–बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।। 5।।

अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम्।
अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतः सुखम्।। 6।।

शैले शैले न माणिक्यं, मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवो न हि सर्वत्र, चन्दनं न वने वने ।। 7।।

पापान्निवारयति योजयते हिताय
गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।

आपद्गतं च न जहाति ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः ।। 8।।

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।।

अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।। 9।।

अपठद् योऽखिलाः विद्याः, कलाः सर्वाः अशिक्षत।
अजानात् सकलं वेद्यं, स वै योग्यतमो नरः।। 10।।

दृष्टिपूतं न्यसेत् पादं, वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।
सत्यपूतां वदेत् वाचं, मनःपूतं समाचरेत्।। 11।।

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्, भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्रीः।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे, हा हन्त! हन्त! नलिनीं गजउज्जहार।। 12।।

शब्दार्थाः

उद्यमः	=	(उत्+यम+) उद्योग।
साहसं	=	उत्साह
धैर्यम्	=	धीरज
वर्तन्ते	=	(वृत् धातुलट्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन) रहते हैं।
सहायकृत्	=	सहायता करने वाला।
आख्याति	=	(आ+ख्या लट् प्रथमपुरुष एकवचन) कहता है।
भाषितम्	=	(भाष्+क्त) बोली।
संभ्रमः	=	उद्वेग, हड़बड़ी।
स्नेहम्	=	प्रेम को
वपुः	=	शरीर
सुधियः	=	(शोभना धीः येषां ते–बहुब्रीहि) बुद्धिमान
सङ्गम्	=	साथ।
अनुव्रजन्ति	=	(अनु+व्रज् लट् प्रथम पुरुष बहुवचन) पीछे चलते हैं।
सख्यम्	=	मित्रता।
समानशीलव्यसनेषु	=	(शीलं च व्यसनं च शीलव्यसने) – द्वन्द्व समास, समाने शील–व्यसने येषां –तेषु –बहुब्रीहि समास) जिनके स्वभाव और लगाव एक समान हो, उनमें।
मदाय	=	मद, घमण्ड, अहंकार के लिए।
परेषाम्	=	दूसरों का।
परिपीडनाय	=	(परितः पीडनम् इति परिपीडनम्) हर प्रकार से कष्ट के लिए।
सम्मोहः	=	अज्ञान।
स्मृतिविभ्रमः	=	(स्मृतेः विभ्रमः–षष्ठी तत्पुरुष) स्मरण शक्ति का नष्ट होना।
प्रणश्यति	=	(प्र नश् लट् प्रथम पुरुष एक वचन) नष्ट होता है।
कुतः	=	कहाँ से।

अविद्यस्य = (अविद्यमाना विद्या यस्य सः–अविद्यः तस्य–बहुब्रीहि) विद्याहीन,मूर्ख का।

अधनस्य = न धनं यस्य सः अधनः तस्य–बहुब्रीहि दरिद्र का।

शैले शैले = प्रत्येक पर्वत पर।

माणिक्यम् = रत्न

मौक्तिकम् = मोती।

निवारयति = (नि वृ णिच्, निवारि+लट् प्रथम पुरुष एक वचन) रोकता है।

योजयते = (युज् णिच्, योजि लट् प्रथम पुरुष एकवचन) लगाता है।

निगूहति = (नि गुह्, लट् प्रथम पुरुष एक वचन) छिपाता है। गुह्यम्–(गुह्+यत् द्वितीया एक वचन) गुप्त बात को।

आपदगतम् = विपत्ति में पड़े हुए को।

जहाति = छोड़ता हैं

स्तुवन्तु = स्तुति अथवा प्रशंसा करें।

समाविशतु = सम्+आ+विश् लोट् प्रथम पुरुष एक वचन) आए।

अद्यैव = (अद्य+एव वृद्धि स्वर संधि) आज ही।

युगान्तरे = दूसरे युग में बहुत दिनों बाद।

यथेष्टम् = (इष्टम् अनतिक्रम्य इति अव्ययीभाव) इच्छानुसार

प्रविचलन्ति = हटते हैं।

अखिलाः = समस्त।

वेद्यम् (विद्+यत्) = (वेदितुं योग्यं) जानने योग्य बातों को।

वै = ही।

दृष्टिपूतम् = (दृष्टयापूतम्–तृतीया तत्पुरुष) दृष्टि से भलीभांति देखकर।

न्यसेत् = (नि+अस् विधिलिङ् प्रथमपुरुष, एकवचन) रखना चाहिए।

वस्त्रपूतम् = वस्त्र से छना हुआ।

सत्यपूताम् = सत्य से शुद्ध

मनः पूतम् = पवित्र मन से

समाचरेत् = (सम्+आ+चर् विधि लिङ् प्रथम पुरुष एक वचन) भली–भाँति व्यवहार करना चाहिए।

सुप्रभातम् = (शोभनम् प्रभातम्–प्रादि तत्पुरुषः) सुन्दर प्रातः काल।

उदेष्यति = (उत्+इण्+लृट प्रथमपुरुष एकवचन) उदय होंगे।

कोशगते = (कोशेगते –सप्तम् तत्पुरुष) कमलदलों के मध्य में स्थित।

विचिन्तयति = (वि+चिन्त्+शतृ प्रत्यय, सप्तमी एक वचन) विचार करते हुए।

नलिनीम् = कमलिनी को

उज्जहार = (उत्+हृ+लिट् प्रथम पुरुष एक वचन) उखाड़ दिया।

अभ्यासः

1. उचितं विकल्पं चिनुत –

1. वपुः आख्यातिः –

(क) भोजनम् (ख) स्नेहम् (ग) वंशम् (घ) भाषितम्

2. खलस्य विद्या कस्मै भवति?

(क) ज्ञानाय (ख) विवादाय (ग) रक्षणाय (घ) दानाय

3. के न सर्वत्र भवन्तिः?

(क) माणिक्यानि (ख) चन्दनम् (ग) साधवः (घ) मौक्तिकानि

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–

(क) न्याय्यात् पथः के न प्रविचलन्ति?

(ख) साधोः शक्तिः किमर्थं भवति?

(ग) कः वंशम् आख्याति?

(घ) कस्माद् बुद्धिनाशो भवति?

3. स्तम्भं मेलनं कुरुत् –

1. दृष्टिपूतं न्यसेत् = वाचम्
2. वस्त्रपूतं पिबेत् = पादम्
3. सत्यपूतां वदेत् = जलम्

4.	शैले शैले न	=	मौक्तिकम्
5.	गजे गजे न	=	चन्दनम्
6.	वने वने न	=	माणिक्यम्

4. "पापान्निवारयति योजयते हिताय गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले, सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।।"

उक्तश्लोकानुसारेण अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरत।

प्रश्ना : –

1. सन्मित्रस्य एकं लक्षणं लिखतु।
2. 'गुह्यं निगूहति' इति वाक्यस्य भावार्थं लिखत।
3. 'इदं प्रवदन्ति सन्तः' इति वाक्यस्य हिन्दीभाषया अनुवादं लिखत्।
4. 'ददाति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् अस्ति?
5. 'गतम्' इति पदे प्रकृतिप्रत्ययश्च लिखत।
6. श्लोके प्रयुक्तम् अव्ययपदं लिखत।
7. श्लोके लिखितानि लट्लकारस्य धातुरूपाणि चित्वा लिखत।

प्रश्न 5. अधोलिखितानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत।

1. विद्या ज्ञान के लिए होती है।
2. आलसी मनुष्य को विद्या प्राप्त नहीं होती है।
3. सभी पर्वत में मणी नहीं होते हैं।
4. अच्छे मित्र गुणों को प्रकट करते है।
5. धीरपुरुष न्याय के मार्ग से विचलित नहीं होते है।

R1J6LJ

–––––000–––––